Vol 4 Issue 11 Dec 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-11 | Dec-2014
Available online at www.isrj.org

पूर्व मध्यकालीन भारतीय सामन्तीय समाज में सती प्रथा एवं नारी (750–1200 ई.)

कंचनलता यादव , एस. एस. नेगी

शोध छात्रा , इतिहास एवं पुरातत्व विभाग , हे.न.ब.ग.वि.वि., (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) श्रीनगर, (उत्तराखण्ड)

सारांश : सती शब्द की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्य में अन्वारोहण (मृत पति के साथ चिता पर चढना), सहमरण (मृत पति के साथ मरना) आदि अनेक शब्द प्रचलित है। इन शब्दों के व्यवहार से स्पष्ट होता है कि विवाहोपरान्त पति–पत्नी का सम्बन्ध जीवितावस्था में अत्यन्त पावन होता था तथा पति के मरने के बाद परलोक और जन्मांतर में भी तद्वत अटूट बना रहता था। अतः 'सती' शब्द की व्यंजना उसके ऐतिहासिक विकास, प्रचलन अैर प्रसार से है, जिसमें मृत पति के प्रति विधवा स्त्री का अनुपम अनुराग, त्याग और बलिदान परिलक्षित होता है। सती प्रथा के ऐतिहासिक उदाहरण चौथी सदी ई.पू. से ही मिलते हैं, जिसका उल्लेख यूनानी लेखकों ने किया है। कालिदास ने इस प्रथा का संकेत 'पतिवर्त्मगा' पद द्वारा किया है। सती होने के सम्बन्ध में गुप्तकालीन अभिलेखीय प्रमाण भी मिलता है। हूणों के विरूद्व युद्व में मृत (510 ई.) सेनापति गोपराज की पत्नी अग्निराशि में प्रविष्ट होकर सती हो गयी थी। यह सही है कि सती प्रथा विशेषकर राजपरिवार और अभिजात वर्ग में ही अधिक प्रचलित थी, किन्तु बाद में इसका प्रचलन जन–साधारण में भी यदा–कदा होने लगा तथा धर्मभीरू जनता भी इसी प्रथा की अनुगामिनी बन गई।

प्रस्तावना :–

पति की मृत्यु के उपरान्त पत्नी द्वारा पति के चिता के साथ अपने को जला लेने के कुछ साक्ष्यों के आधार पर भारत में सती प्रथा के अस्तित्व की बात स्वीकार की जाती है। वैदिकाल में संभवतः यह परंपरा प्रतीक रूप में विद्यमान थी, अथर्ववेद के एक मंत्र से ज्ञात होता है कि विधवा पति के अन्त्येष्टि के अवसर पर मृत पति के बगल में लेटती थी, बाद में उससे उठने के लिए कहा जाता था तथा संतान व सम्पत्ति से युक्त उन्नत जीवन व्यतीत करने का आशीर्वाद दिया जाता था[1]। स्ट्रैबो तक्षशिला के रीति रिवाज के संदर्भ में अरिस्तोबुलस को उद्वत करते हुए लिखता है कि यहां पत्नियां प्रसन्नता पूर्वक अपने मृत पतियों के साथ जल जाती हैं और जो स्त्रियॉ जलने से इंकार करती हैं वे निरादृत होती हैं[2]। इसी प्रकर के एक अन्य वर्णन में स्ट्रेबो डियोडोरस के उद्वत करता है, जिसके अनुसार विधवाओं के लिए यह रिवाज था कि वे मृत पति के साथ जल जायें। वह आगे लिखता है कि यदि वे ऐसा नहीं करती थी। तो उन्हें जीवन पर्यन्त यज्ञ एवं अन्य धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने का कोई अधिकार नहीं होता था[3]।

यद्यपि वैदिक तथा वैदिकोत्तर कालीन स्रोतों में सती के ऐसे कोई पुष्ट प्रमाण नहीं हैं जिसके आधार पर प्राचीन भारत में इस प्रथा के प्रचलन की बात पुष्ट हो सके। अथर्ववेद के प्रतीकात्मक संकेतों को विद्वानों ने प्रायः सती प्रथा के प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया है[4]। सती प्रथा से सम्बन्धित पहला अभिलेखीय साक्ष्य एरण अभिलेख (510 ई.) है[5]। यह अलग बात है कि भारत में स्त्रियों से मर्यादित आचरण की अपेक्षा अवश्य की जाती थी चूंकि पति की मृत्यु के उपरान्त विधवा का जीवन एकाकी हो जाता था, ऐसे में संभ्रान्त कह जाने वाले वर्णो में जो स्त्रियों को अपनी मर्यादा व प्रतिष्ठा से जोड़कर देखते थे इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हुई होगी। रामशरण शर्मा जैसे विद्वान भारत में सती प्रथा के विकास को सामंती मूल्यों के साथ जोड़कर देखते हैं तथा मुख्य रूप से इनको पूर्व मध्यकालीन परिस्थितियों की उपज मानते है[6]। महाभारत काल में सती के उदाहरण प्राप्त होते है। पाण्डु की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी माद्री के सती होने का उल्लेख महाभारत में प्राप्त होता है[7]। कृष्ण के पिता वासुदेव के मरने पर उनकी चार पत्नियों ने अन्वारोहरण किया था[8]। कालिदास ने पतिवर्त्भगा पद द्वारा सती धर्म का उल्लेख किया है। वृहत्संहिता में सती धर्म की प्रंशसा है[9]। जबकि कादम्बरी, मृच्छकटिकम्[10] जैसे ग्रन्थों में सती प्रथा के प्रति निंदा के स्वर है। गुप्त कालीन साहित्य व अभिलेखों में सती प्रथा के समर्थन तथा विरोध दोनों प्रकार की स्थितियां दिखाई देती है। सामंत गोपराज की रानी राज्यवती[11] और रानी यशोमती के पति की चिता पर सती होने के गुप्तकालीन प्रमाण विद्यमान हैं, वहीं चन्द्रगुप्त का अपने ज्येष्ठ भ्राता रामगुप्त की विधवा के साथ विवाह दूसरी स्थिति का परिचय देता है[12]। गुप्तकालीन अनेक स्मृतियां विधवाओं को जीवन रहकर व्रत आदि

नियमों का पालन करते हुए पति की सम्पत्ति का अधिकार पाना धर्म सम्मत मानती है[13]। पैठीनसि, व्याघ्रपाद, अंगिरा और उशना[14] ब्राहमणी विधवा का सती होना पूर्ण अथवा वैकल्पिक रूप से अमान्य करते है। गर्भधारण की स्थिति में तो विधवाओं को जीवन रहना अनिवार्य था। वे किसी भी कीमत पर सती धर्म का पालन नही कर सकती थी[15]। पति की मृत्यु के उपरान्त समाज में दो प्रकार की स्थितियों के प्रचलन के संकेत मिलते है। एक पति के साथ सती हो जाना या शेष जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य वर्त का पालन करना[16] वृहस्पति का भी कथन है कि पति के मृत्यु पर पत्नी अन्वारोहण करे या शेष जीवन सच्चरित्रता के साथ व्यतीत करें[17]। मृत्यु पति के स्त्रियों के विषय में अलबरूनी का कथन है कि वह दो चीजों में एक को चुनती है, जीवन पर्यन्त विधवा रहना या अपने को जला देना। विधवा स्त्रियों का स्वयं को जला देने की घटना को अच्छा समझा जाता रहा है, क्योकि विधवा के रूप में जब तक जीवित रहती उससे बुरा बर्ताव किया जाता। राजाओं की पत्नियों के सम्बन्ध में चाहे वे चाहती हो या नहीं उनके यहां जला देने का व्यवहार है। जिसमें वे चाहते हैं कि उनमें से कोई भी, ऐसा कार्य न करें जो उनके प्रसिद्व पति के विरूद्व हो, उन स्त्रियों के यह अपवाद है जो अधिक उम्र की है और जिनकों सन्तान है क्योकि पुत्र अपनी माता का उत्तरदायी रक्षक है[18]। अलबरूनी के पूर्ववर्ती अरब यात्री सुलेमान का कथन सती प्रथा के सम्बन्ध में थोड़ा अलग है वह लिखता है कि यहॉ यह नियम है कि जब राजा मरता है तब उसके साथ उसकी सब रानियां जल जाती है, यह केवल उनकी इच्छा पर निर्भर है इसमें कोई जबरदस्ती नही है[19]। सुलेमान का कथन कुछ अधिक सत्य प्रतीत होता है क्योकि भारतीय समाज में स्त्रियों के साथ सती होने के लिए जोर जबरदस्ती किये जाने के सन्दर्भ कम है। मनु स्मृति के टीकाकार मेधातिथि ने सती प्रथा को आत्महत्या कहकर इसकी आलोचना की है[20]। स्मृतिविधानों तथा अन्य सन्दर्भो से यह बात प्रमाणित होती है कि प्राचीन भारत में सती प्रथा किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रही है।

मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग तथा राजस्थान में सती स्मारक शिलायें प्रकाश में आयी है। इसमें से कुछ मध्य प्रदेश के चन्देल और कलचुरी राज्यों में मिलती है किन्तु अधिकांश राजस्थान राज्य में पायी जाती है[21]। जौहर की प्रथा दिल्ली सुल्तानों के आक्रमण के साथ शुरू हुई। इनमें राजपूत राजकुमारों की पत्नियां किले के भीतर स्वयं जलकर मर जाती थी। रामशरण शर्मा और जौहर शब्द को ''यम गृह'' अथवा ''जमघर'' से व्युत्पन्न मानते है[22]। कभी–कभी रानियों के साथ राजकुमार भी अपने को जला लेता था[23]। इस प्रकार का उदाहरण भारतीय समाज की सुदृढ़ परिवारिक व भावनात्मक पृष्ठभूमि की अभिव्यक्ति है।

सती प्रथा के सम्पूर्ण उद्वरणों को देखने से यह बात स्पष्ट होती है यह प्रथा सर्वाधिक क्षत्रियों में ही प्रचलित थी कुछ प्राचीन ग्रन्थों की अनुशंसा के अनुसार सती प्रथा क्षत्रियों के लिए मान्य थी[24]। अंगीरस ब्राम्हण विधवा द्वारा सती होने को आत्महत्या[25] बताते हैं। पद्म पुराण में जहां विधवा के सती होने की प्रथा है वही ब्राहम्णों के लिए सती होने का निषेध[26] किया गया है। इसके विपरीत बंगाल के ब्राह्मणों में यह प्रथा अपेक्षाकृत अधिक व्यापक रूप में प्रचलन में थी। पी.वी. काणे[27] तथा ए.एस. अल्तेकर[28] का मानना है कि इसका कारण बंगाल में प्रचलित दाय के नियम है।

पाद–टिप्पणी

1–इयं नारी पतिलोक वृणाना निपते उपत्वा मर्त्यप्रेता म।
धर्म पुराण मनुपालयन्ती तस्य प्रजां प्रविणं च धन्त द्वितीय।।
अर्थर्ववेद, संपादक– आर0रॉथ और डब्ल्यू.डी. हिटनी बर्लिन, 18/21, 1856 ई.।
2– ऐंशियंट इंडिया, मैक्रिन्डल जे. डब्ल्यू., पृ. 69।
3–पूर्वोक्त, पृ. 69–70।
4–रामशरण शर्मा, प्रारंभिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, पृ. 88।
5–पूर्वोक्त।
6–रामशरण शर्मा, प्रारंभिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, पृ. 88।
7–माहाभारत आदिपर्व 126–25–26।
8–पूर्वोक्त मौसल पर्व– 17.7.18.24
9–कुमार संभव 4,33,35,36,45।
10–वृहत्संहिता 84,16।
11–अंक 10 ।
12–गोपराज के सती स्तम्भ की अभिलेख क्लासिकल एज पृ. 33।
13–भगवतशरण उपाध्याय, गुप्त काल का सास्कृतिक इतिहास पृ. 218–219।
14–कात्यायन 626–27, पराशर 4.31।
15–याज्ञवल्क्य स्मृति 1,87 पर अपरार्क द्वरा उद्धत।
16–रघुवंश 19,56।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.कौटिल्य : अर्थशास्त्र, सम्पादक–देवदत्त शास्त्री, इलाहाबाद, 1957 ई.।
2.सोमदेव : कथासरित्सागर, 2खण्ड, सम्पादक– केदारनाथ शर्मा, पटना, 1960, अंग्रेजी अनुवाद, टॉनी, 2

खण्ड, कलकत्ता, 1880 ई.।
3.राजशेखर : काव्यमीमांसा, संपादक– सी.डी. दलाल तथा आर.ए. शास्त्री, बड़ौदा, 1934 ई.।
4. पद्मगुप्त : नवसाहसांकचरित, बम्बई, 1895 ई.।
5.विज्ञानेश्वर : मिताक्षरा, याज्ञवल्क्यस्मृति पर भाष्य, बम्बई, 1909 ई.।
6.विल्हण : विक्रमांकदेवचरित, बम्बई, 1875 ई.।
7.ए.एस. अल्तेकर : पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, बनारस, 1956 ई.।
8.गौरीशंकर हीराचन्द ओझा : राजपूताना का इतिहास, भाग–1, अजमेर, 1936 ई.।
9.कर्नल टॉड : ऐनल्स एण्ड ऐन्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान ऑक्सफोर्ड, 1920 ई.।
10. आर.सी. अमूजमदारः दि ऐज ऑफ इम्पीरियल कन्नौज, द्वितीय संस्करण, बम्बई,1964 ई.।
11. डॉ. उर्मिला प्रकाश मिश्रः प्राचीन भारत में नारी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2002 ई.।
12. रामशरण शर्मा : प्रारंभिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
13. इ. सचाऊ : अलबरूनीज इण्डिया, लंदन, 1921 ई.।
14.बी.ए. स्मिथ : अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, चतुर्थ संस्करण, आक्सफोर्ड, 1924 ई.।
15.डी.सी. सरकार : सेलेक्टेड इंस्क्रिप्शन्स, भाग–1, कलकत्ता, 1965 ई.।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org